गुरुकृपायोगानुसार साधना

भूमिका

जीवनके दुःखोंका धैर्यसे सामना करनेका बल व सर्वोच्च श्रेणीका स्थायी आनंद केवल साधनासे ही प्राप्त होता है । साधना अर्थात ईश्वरप्राप्ति हेतु आवश्यक प्रयत्न । गुरुकी कृपा बिना साधनाद्वारा ईश्वरप्राप्ति साध्य करना अत्यंत कठिन है । गुरुकृपाद्वारा ईश्वरप्राप्तिकी दिशामें बढना अर्थात 'गुरुकृपायोग' । गुरुप्राप्ति हेतु एवं गुरुकृपाकी वर्षा निरंतर होने हेतु आवश्यक साधना है 'गुरुकृपायोगानुसार साधना' ।

गुरुकृपायोगानुसार साधनाके दो अंग हैं – व्यष्टि साधना (व्यक्तिगत उन्नति हेतु) एवं समष्टि साधना (समाजकी उन्नति हेतु) । इन दोनों अंगोंके विविध पहलुओंको आचरणमें लानेका मार्गदर्शन इस लघुग्रंथमें किया है । गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि इस लघुग्रंथमें दिए अनुसार साधना कर प्रत्येक व्यक्ति गुरुकृपाका पात्र बने । – **संकलनकर्ता**

अनुक्रमणिका

卐	**भूमिका**	७
१.	‘साधना’ शब्दका अर्थ	८
२.	गुरु	८
३.	गुरुकृपायोग (अर्थ एवं महत्त्व)	११
४.	गुरुकृपायोगानुसार साधना	१७
५.	गुरुकृपायोगानुसार करनेयोग्य साधनाका नियम – ‘जितने व्यक्ति उतनी प्रकृतियां, उतने साधनामार्ग’	१८
६.	गुरुकृपायोगानुसार करनेयोग्य साधनाके प्रमुख सिद्धांत	१९
७.	साधनामें सम्भावित मूलभूत चूकें	४३
८.	गुरुकृपायोगानुसार साधनाके प्रकार	५०